श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

श्री शत्रुंजय-मुक्ति सा विद्या या विमुक्तये सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड़, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान प्रवेशिका

(4)

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर प्रथमवर्ष-५ शहर Answer Sheet-2021-22

विद्यार्थी का नाम ____________________

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	સૌમ્ય પ્રકૃતિ
(२)	પાપ
(३)	કાઉસ્સગ્ગ
(४)	મધુર સુખકર
(५)	તત્વ જ્ઞાન
(६)	સાધના
(७)	અન્નત્થ સૂત્ર
(८)	ઇરિયાવહી
(९)	રૂપ
(१०)	સુક્ષ્મ
(११)	માઘ
(१२)	કઠોર
(१३)	નિર્માણનામ
(१४)	સ્વયં
(१५)	કઠોર
(१६)	પશ્ચાતાપ
(१७)	બંધ
(१८)	કાંપિલ્યપુરી
(१९)	ગુરુજનો
(२०)	અનિત્ય

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	અભયદાન
(२)	પુષ્પદંત
(३)	ભતા
(४)	સંઘયણ
(५)	પાપભીરુ
(६)	ચંદનબાળા
(७)	આદેય
(८)	ચંપાપુરી
(९)	તેઇન્દ્રિય
(१०)	શીતલનાથ
(११)	ચંડરુદ્રાચાર્ય
(१२)	ઇર્યાપથિકી
(१३)	ભડકી
(१४)	પરિણામી
(१५)	સિંચાણા

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	ધ્યાન સે
(२)	શલ્ય રહિત
(३)	આજ્ઞા આપો
(४) 5	चक्कर आने से
(५) 5	आदेय
(६) 6	खेद पहुंचाना
(७)	અધિક નિર્મલ
(८)	ચિટીયાં
(९)	કર્મો કા
(१०)	અલસીયા
(११)	તિર્થંકરો
(१२)	વેભડી
(१३)	બુઢાપા ઔર મૃત્યુ કો
(१४)	નિર્માણ
(१५)	પૈરો સે કુચલતે
(१६)	અનંતનાથ કો
(१७)	પ્રથમ સંસ્થાન
(१८)	વહાં તક
(१९)	મેરે દ્વારા
(२०)	ગોવાલક

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	3	(६)	10
(२)	6	(७)	5
(३)	9	(८)	2
(४)	1	(९)	7
(५)	8	(१०)	4

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	21
(२)	42
(३)	48
(४)	16
(५)	1824120
(६)	9
(७)	19
(८)	25,000
(९)	23
(१०)	3

प्रश्न-६ ✓ या × / प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर

	प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	×	(१)	12
(२)	×	(२)	11
(३)	✓	(३)	3
(४)	×	(४)	9
(५)	✓	(५)	14
(६)	×	(६)	21
(७)	✓	(७)	18
(८)	×	(८)	8
(९)	✓	(९)	13
(१०)	✓	(१०)	16

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ____________________ जांचनेवाले की सही ____________________

प्रश्न - ८

→ १. ऊँचा श्वास लेने से श्वास नीचे छोडने से, खांसी आने से, छींक आने से बगासा, डकार आने से पवन छूटने से, चक्कर आने से, पित्त के प्रकोप से मुर्छा आने से, सूक्ष्म रूप से शरीर हिलने से, थूक निकलने से दृष्टि घुमाने से, इत्यादि आगारो से मेरा कायोत्सर्ग भंग न हो या विराधना न हो ऐसी समझ के साथ कायोत्सर्ग हो। ऐसी समझ अन्नत्थ से हुज्ज मे काउस्सग्गो मे दी है।

→ २. थाली धोकर पीने का रिवाज जैन दर्शन मे है। उसके पीछे भी जीवदया का रहस्य छुपा हुआ है। कोई भी नरम खाने की वस्तु जिसे हमने झूठा किया हो उसमे 48 min बाद जीव (लारीया) उत्पन्न होते है ये जीव द्विइन्द्रिय जीव है। ऐसे अनेक जीवो की हिंसा का पाप हमे लगता है। इसीलिए एकासना, आयंबिल आदि भी 48 min मे कर लेना चाहिये तथा थाली मे कुछ भी झूठा नही छोडना चाहिये। जिससे जयणा का पालन हो सके।

→ ३. जहा इन्द्रियो की परिपूर्णता न हो वहा स्वतंत्रता पूर्वक धर्म संभव नही इसका तात्पर्य ये है कि हमारा इन्द्रियो पर वश होना जरूरी है। जैसे की बताया गया है कि नरम चीज यदि रात भी रह जाये तो उसमे जीव उत्पन्न हो जाता है यदि खाद्य पदार्थ के स्वाद मे फर्क पड जाए या बास आए तो उसमे भी द्विइन्द्रिय जीव उत्पन्न होते है इससे पहले ही वस्तु वापर लेनी चाहिये।

→ ४. श्री चन्द्रप्रभस्वामी भगवान पहले तीसरे भव मे धातकी खंड के महाविदेह मे पद्म नाम के राजा थे। फिर दीक्षा लेकर बीस स्थानक की आराधना से तीर्थंकर नाम कर्म बांधकर वैजयंत विमान मे देव हुए। लक्ष्मणा रानी के गर्भ मे फागुन वदि पंचमी के दिन आये। मागसर वदि द्वादशी को जन्म। मागसर वदि तेरस को एक हजार राजाओ के साथ दिक्षा ली व महावदि सप्तमी को चन्द्रपुरी मे केवलज्ञान पाया। इन प्रभु को दत्त आदि 93 गणधर ढाई लाख साधु, तीन लाख अस्सी हजार साध्वीया, ढाई लाख श्रावक और चार लाख इकयानवे हजार श्राविकाए इतना परिवार था।

→ ५. पुण्य बन्ध के 9 प्रकार इस तरह से है ① सुयोग्य पात्र मे अन्नदान करने से। ② सुयोग्य पात्र मे पानी दान करने से ③ स्थान का दान करने से ④ शयन या सोने का दान करने से ⑤ वस्त्रदान करने से ⑥ मन मे शुभ चिंतन करने से ⑦ वचन मे शुभ व्यापार-व्यवहार करने से ⑧ काया से शुभ व्यापार-व्यवहार करने से- ⑨ देव गुरू उपकारी, बडो को नमस्कार करने से।